Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AP–451

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI

Paper - I

(गद्य साहित्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

1. (i) 'गोदान' उपन्यास में निहित समस्याओं का चित्रण लेखक ने किया है। उन्हें स्पष्ट कीजिए।

   (ii) 'गोदान' में परिवेश या वातावरण तत्त्व की समीक्षा कीजिए।

(iii) प्रसाद जी ने अपने नाटकों पर होने वाले अभिनेयता सम्बन्धी दोषारोपण के मत पर अपने क्या विचार व्यक्त किए हैं ?

(iv) 'शर्वनाग' न्यायाधिकरण के सामने उसकी मानसिक वेदना एवं आत्मग्लानि को किन शब्दों में व्यक्त किया गया है ?

(v) ''यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।'' शब्द किसने कहे और क्यों ?

(vi) मालती के पिता द्वारा दी गई पुस्तक को किस प्रकार से पढ़ा ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

(vii) नंद दुलारे वाजपेयी की निबंध शैली पर प्रकाश डालिए।

(viii) तीसोत्तर के दशक को कुबेरनाथ राय ने किस तरह का बताया है ?

(ix) भाभी के ससुराल, मायके में कौन-कौन था ? लिखिए।

(x) महादेवी जी ने 'अरण्य रोदन' शब्द का प्रयोग किस घटना के लिए किया है ?

खण्ड–ब प्रत्येक 8

सात में से किन्हीं **पाँच** गद्यावतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **200** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

2. वोट नये युग का मायाजाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है; उसके चक्कर में पड़कर आप न इधर की होंगी न उधर की। कौन कहता है कि आपका क्षेत्र संकुचित है और उसमें आपको अभिव्यक्ति का अवकाश नहीं मिलता। हम सभी पहले मनुष्य हैं, पीछे और कुछ। हमारा जीवन हमारा घर है। वहीं हमारा पालन होता है, वहीं जीवन के सारे व्यापार होते हैं। अगर वह क्षेत्र परिमित है, तो अपरिमित कौनसा क्षेत्र है ? क्या वह संघर्ष, जहाँ संगठित अपहरण है ? जिस कारखाने में मनुष्य और उसका भाग्य बनता है, उसे छोड़कर आप उन कारखानों में जाना चाहती हैं, जहाँ मनुष्य पीसा जाता है, जहाँ उसका रक्त निकाला जाता है ?

3. अगर प्रेम खूँखार शेर है तो मैं उससे दूर ही रहूँगी। मैंने तो उसे गाय ही समझ रखा था। मैं प्रेम को सन्देह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं आत्मा की वस्तु है। सन्देह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो सन्देह का ही परिणाम है।

4. लक्ष्मी की लीला, कमल के पत्तों पर जल बिन्दु, आकाश के मेघ समारोह अरे इनसे भी क्षुद्र नीहार-कणिकाओं की प्रभात-लीला, मनुष्य की अदृष्ट लिपि वैसी ही है जैसी अग्नि-रेखाओं से कृष्ण मेघ में बिजली की वर्णमाला—एक क्षण में प्रज्वलित, दूसरे क्षण में विलीन होने वाली। भविष्यत् का अनुचर-तुच्छ मनुष्य अतीत का स्वामी है।

5. परन्तु इस संसार का कोई उद्देश्य है। इसी पृथ्वी को स्वर्ग होना है, इसी पर देवताओं का निवास होगा, विश्व-नियंता का ऐसा ही उद्देश्य मुझे विदित होता है। फिर उसकी इच्छा क्यों न पूर्ण करूँ, विजया ! मैं कुछ नहीं हूँ, उसका अस्त्र हूँ—परमात्मा का अमोघ अस्त्र हूँ। मुझे उसके संकेत पर केवल अत्याचारियों के प्रति प्रेरित होना है ? किसी से मेरी शत्रुता नहीं, क्योंकि मेरी निज की कोई इच्छा नहीं। देशव्यापी हलचल के भीतर कोई शक्ति कार्य कर रही है, पवित्र प्राकृतिक नियम अपनी रक्षा करने के लिए स्वयं सन्नद्ध है।

6. सामने शैल माला की, चोटी पर हरियाली में, विस्तृत जल-प्रदेश में नील पिंगल संध्या, प्रकृति की एक सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया, स्वप्न-लोक का सृजन करने लगी। उस मोहिनी के रहस्यपूर्ण नील जाल का कुहुक स्फुट हो उठा। जैसे मदिरा से सारा अन्तरिक्ष सिक्त हो गया। सृष्टि नील कमलों से भर उठी। उस सौरभ से पागल चम्पा ने बुद्धगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिये।

7. उसकी व्यथा अपनी गम्भीरता के कारण ही दुर्बोध बन गई थी। हमारे यहाँ का पुरुष उसे ठीक रूप में किस अंश तक समझ सकेगा, यह कहना कठिन है। पुरुष बेचारे की उग्र तपस्या और अखण्ड साधना स्त्री के द्वारा प्रायः भंग होती रही है, इसी से उसने इस मायाविनी जाति के स्वभाव की व्याख्या करने के लिए पोथे रच डाले हैं।

8. ''यही बाहर हँसता-खेलता, रोता-गाता, खिलाता-मुरझाता जगत भीतर भी है जिसे हम मन कहते हैं। जिस प्रकार यह जगत रूपमय और गतिमय है, उसी प्रकार मन भी रूप-गति का संघात ही है। रूह मन और इन्द्रियों द्वारा संघटित है या मन और इन्द्रियों रूपों द्वारा, इससे यहाँ प्रयोजन नहीं है। हमें तो केवल यही कहना है कि हमें अपने का और अपनी सत्ता का बोध रूपात्मक ही होता है।''

खण्ड–स

प्रत्येक 20

चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **500** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

9. ''मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है।'' इस कथन को ध्यान में रखते हुए मालती के चरित्र की समीक्षा कीजिए।

10. 'स्कन्दगुप्त' नाटक में चित्रित देशकाल का विश्लेषण करते हुए बताइये कि इसमें अतीत के माध्यम से प्रसाद ने अपने ही काल के सत्य का उद्घाटन किया।

11. 'पत्नी' कहानी का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए और सुनन्दा के चरित्र की मुख्य-मुख्य रेखाएँ अंकित कीजिए।

12. 'बदलू' रेखाचित्र के आधार पर बदलू का चरित्र-चित्रण कीजिए।